शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'मैला आँचल' का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(ग्रामीण जीवन के संदर्भ में)

अनीता पाटीदार (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि में विभिन्न बदलावों का चित्रण मिलता है। इसे साहित्य के माध्यम से लेखक ने विभिन्न विधाओं के माध्यम से उकेरा है। उपन्यास में विभिन्न दृष्टिकोणों के द्वारा ग्रामीण जनजीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। रेणु जी ने अपने उपन्यास में ग्रामीण जीवन के विभिन्न अंतरविरोधों को उद्घाटित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके उपन्यास मेला आँचल का समजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

औपनिवेशिक काल में जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करने के साथ ग्रामीण समाज की संघर्षगाथा को अनेक स्तरों पर रेणुजी ने परखा है। फणीश्वरनाथ रेणु एक ऐसे मुकुटमणि हैं, जिन्होंने मैला आँचल उपन्यास में औपनिवेशिक, राजनैतिक, सामंतीशोषण, स्वाधीनता आंदोलन आदि विषयों का आत्मावलोकन किया। ग्रामीण जीवन संघर्ष की अनुभूतियों से लेकर देश की गरीबी, बेकारी, दयनीय कृषक एवं मजदूर दशा, भ्रष्टाचार, लालच, शोषण, लाचारी आदि की अपनी रचनाओं में गहरी छाप प्रस्तुत की। उन्होंने लिखा है :

"इसमें कुल भी है, शूल भी हैं, गुलाब भी हैं,
कीचड़ भी, मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।"2

मैला आँचल और ग्रामीण जीवन

ग्रामीण जीवन में उपस्थित जीवन की भयावह स्थितियों पांखड छल, कपट, ढोंग, भ्रष्ट व्यवस्था, आडम्बर जैसी समाज विरोधी करतूतों का चित्रण उपन्यास में स्पष्ट दृष्टिगत होता है। "आपातकाल की काली रातों में रेणु ने प्रजातंत्र का गला घूँटता देखा। जिस आजादी के लिये संघर्ष कर अनेक बीमारियाँ पाली। जिंदगी अस्त-व्यस्त थी। वह आजादी यह रूप ले लेगी-ये स्थिति रेणु को समस्त भारतवासियों के साथ दुखी कर रही थीं।"1 मैला आँचल के बारे में कथाकार उल्लेख करते हैं कि - "यह है मैला आँचल - एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है। पूर्णिया - मैंने एक ही हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है।"3

इस उपन्यास में ग्रामीण भूमि विपुल भी है और विषम भी। ग्रामीण जीवन के यथार्थ के रू-बरू होते हैं। रीति-रिवाज प्रथा, धार्मिक-विष्वास, जातिवाद, भेदभाव, रूढ़ियाँ, परम्पराएँ, पर्व-त्यौहार आदि से जुड़े जनजीवन की छवि इसमें मिलती है। "कथा की सारी अच्छाई और बुराइयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ खड़ा हुआ हूँ पता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नहीं अच्छा किया या बुरा जो भी जो हो अपनी निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता।"4

उपन्यास में प्रथम खण्ड में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के जीवन का वर्णन हुआ है इस समय आम आदमी कृषक, मजदूर, अभावों, शोषण, अत्याचारों की अग्नि में जूझ रहा था "एक दिन या दो दिन की बात हो तो किसी तरह खपा भी जा सकती है सात दिन बिना मजूरी के ! यह जरा मुश्किल मालूम होता है।"5

जहाँ एक ओर भरपूर काम लिया जा रहा वहीं वेतन न मिलने से मजदूर अहसाय हो गये 'बिना पगार के मन विचलित हो उठा' "यदि मालिक लोग आधे दिन की मजूरी दे दें तो काम चल जाय।"6

वहीं लेखक आशा की अलख जगाने का कार्य भी करता है तथा समाधान खोजने का भी प्रयास करते हैं। "उट्ठो किसानों के सच्चे सपूतों। धरती के सच्चे मालिकों उठो ! क्रान्ति का मशाल लेकर आगे बढ़ो।"7

आजादी के बाद जमींदारी प्रथा तो समाप्त हो गई किन्तु शोषण अविराम चलता रहा। विश्वनाथ प्रताप नामक व्यक्ति एक ओर हजारों बिघा जमीन का मालिक हैं तो दूसरी ओर कृषकों की मुठीभर जमीन भी छीन ली गई और उस पर एकाधिकार स्थापित कर लिया। मालिक मनमानी शर्तों पर किसानों, मजदूरों का शोषण करता है तथा ऋण देकर उनकी यातनाओं, पीड़ा को गहरा घाव देता है।

शोषित वर्ग ने धन और बाहुबल से समाज में विभिन्न विकृतियाँ पनपने लगी। ये वर्ग महिलाओं और जनता को इसका हिस्सा बना रहा था। फुलिया रघिया जैसी अनेक ऐसी महिलाऐं समाज में होती हैं जो विवषता में घिनोने अपराध का शिकार बनती हैं।

रेणुजी दूसरी ओर इन सब समस्याओं से छुटकारा तभी मानते हैं जब "जिस दिन धनी, जमींदार, रोढ़ और मील वालों को लोग राह चलते कोढ़ी और पागल समझने लगेंगे उसी दिन, उसी दिन असल सुराज हो जायेगा।"8

यहाँ मेरीगंज के किसान भी उसी तरह दबे थे जैसे गोदान के किसाने थे।

परिवार प्रणाली में सामुदायिक भावना के साथ जातिगत बंधन मजबूत होने से लोग अलग-अलग जातियों में रहते थे। "बाबनदास सोचता है अब लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी .... लिखवा लें। भूमिहार, राजपूत, कायस्थ, यादव, हरिजन।"9 "जाति बहुत बड़ी चीज है... जाति की। बात ऐसी है कि सभी बड़े-बड़े लेकर अपनी-अपनी जाति की पार्टी में हैं ..... यही तो राजनीति है।"10

जातिगत व्यवहार वर्तमान ग्रामीण समाज में भी परिलक्षित होती है। यहाँ राजनीतिक स्वार्थसिद्धि भी इसका उद्देश्य रहा है। जो गुमराह की स्थिति उत्पन्न कर रहा है। यही सामाजिक विषमता एवं विसंगतियाँ लेखक को आहत करती है।

गाँव में अंधविश्वास का बोलबाला स्पष्ट नजर आता है। कमला नदी के बारे में जनश्रुति है कि वह लहरों से उछालकर शादी ब्याह आदि कार्यों में बर्तन देती है। यहां परोपकारी एवं शीघ्र विश्वास करने जैसी पद्धति गाँववासियों में देखने को मिलती है तो लेखक अंधविश्वास को नकारते का प्रयास भी करते हैं। वहीं ज्योतिष, डॉक्टर, ब्राह्मण आदि की विचारधारा इस प्रकार है। डॉक्टर रोज डिस्पेंसरी खोलकर शिवजी की मूर्ति पर बेलपत्र चढ़ाने के बाद संक्रमण और भयावह रोगों को फैलने की आशा में कुर्सी पर बैठता है, "जहाँ हर साल कोसी (नदी) का तांडव मृत्यु होता है और पूर्णिया का पूर्वी आँचल जहाँ मलेरिया

और काला आजार हर साल मृत्यु की बाड़ ले आते हैं।"11 गाँव की जनता संवेदनशील, भोली एवं भावुक होती है हर वस्तु को आत्मसात कर लेती है वहीं बुद्धि कौशल व्यक्ति स्वार्थ सिद्धि से जुड़ा हुआ है। लेखक जनचेतना जाग्रत करने का प्रयास अनेक सेन्टर खुलवाकर करते हैं।

आस्था में गाँववासी काली माँ के भक्त हैं वो नदी को पूज्य इसलिए मानते हैं क्योंकि वह जल देती है और उसमें स्नान कर पवित्र अनुभव करते हैं और इस कारण गाँववासी श्राद्ध या अन्य पर्व पर नदी को निमंत्रण भी देने जाते हैं। यहाँ प्रकृति के प्रति अटूट श्रद्धाभाव दिखाई देता है।

निष्कर्ष

मैला आँचल उपन्यास में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। शोषण के विरूद्ध आवाज उठाकर शोषितों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की। रेणुजी की रचना धर्मिता सत्ता व्यवस्था तथा पूंजीवाद के प्रति गहरा आक्रोश व्यक्त करने में निरंतर अग्रणी रही है। "सच कहता हूँ अगर इस जन आंदोलन से अपने को किसी तरह अलग-थलग रख पाने में सफल हो पाता या तटस्थ हो जाता अथवा मौखिक सहानुभूति प्रकट कर रह जाता तो न प्रेमचंद ने मुझे माफ किया होता और न निराला ने।"12

उपर्युक्त वर्णित परिवेश एवं देश के अन्य स्थानों पर वर्णित परिवेश में कोई सूक्ष्म अंतर नहीं है, क्योंकि मेरीगंज में होने वाला शोषण सभी जगह विद्यमान रहा है। जमींदारों, मिल मालिकों, दलालों के चोचलेबाजियाँ हर जगह समान रूप से एक जैसी हैं। किसानों और मजदूरों, महिलाओं का शोषण प्रतीक रूप में हुआ है जो इससे ज्यादा हो सकता है किन्तु यह प्रतीक हम समस्त देश में स्वीकार कर सकते हैं। रेणुजी ने मैला आँचल में ग्रामीण समाज का स्पष्ट चित्रण किया है। इसमें समस्त आस्थाओं, नीतियों, रीति-रिवाजों, धार्मिक विष्वासों आदि के बारे में परम्परागत झाँकी मिल जाती हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से रेणुजी ने सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त समस्त दोषों को उजागर किया है। भीतरी एवं बाह्य गड़बड़ियों को गहराई से अनुभूत किया है। रेणुजी ने ग्रामीण परिवेश को उजागर करने और उभारने का सफल प्रयत्न किया है।

संदर्भ सूची

1. सूरज पालीवाल - रेणु का कथा साहित्य, पृ. 9
2. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल की भूमिका से
3. वही, मैला आँचल, पृ. 4
4. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल की भूमिका से
5. वही, मैला आँचल, पृ. 18
6. वही, पृ. 18
7. वही, पृ. 109
8. वही, पृ. 294
9. वही, पृ. 182
10. वही, पृ. 324
11. वही, पृ. 54
12. फणीश्वरनाथ रेणु - रेणुजी का आत्मपरिचय, पृ. 158